आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीतिका राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के संदर्भ में एक अध्ययन

डॉ॰ रेवत सिंह
शोध निर्देशक
श्री अग्रसेन स्नात्तकोतर शिक्षा महाविद्यालय,
केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर।

अनिल कुमार
शोधार्थी
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

➢ **सारांश :–**
भारत की सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक पृष्ठभूमी की ही भाँति शिक्षा प्रणाली का इतिहास भी प्राचीन है। यह सर्वमान्य है कि भारतवर्ष में लिपि से पूर्व साहित्य बन चुका था। गुरु–शिष्य परम्परा से पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से इसकी रक्षा होती रही इसी कारण वेदों को श्रुति साहित्य कहा जाता है। इस काल क्रम में ही एक महान गुरु शिष्य परम्परा का निर्माण हुआ और विधाध्ययन हेतु गुरुकूलों की स्थापना और राज्य द्वारा उनके सरंक्षण की परम्परा का उद्भव हुआ।प्राचीन भारतीय इतिहास में अनेक ऐसे महापुरूष हुये है जिन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति को अपने विचारों, कार्यो एवं प्रयासों से नई दिशा प्रदान की आचार्य चाणक्य भी उन महापुरूषों अथवा महान शिक्षाविद्ों में से एक है। जिन्होनें अपनी कृतियोंएवं रचनाओं के माध्यम से भारतीय शिक्षा दर्शन और शिक्षा पद्धतिपर गहरा प्रभाव छोडा तथा वर्तमान समय में भी अपनी प्रासंगिकता को बनाये हुए है। क्योंकि वर्तमान भारतीय समाज में आधुनिकता, अर्थ की प्रधानता, एकांकी प्रवृति, स्वार्थपरता, एवं सत्ता की लालसा की प्रवृत्ति के कारण मानवीय मूल्य, सदाचार, धार्मिक सहिष्णुता जैसे जीवन मूल्य एवं आदर्श कही खो गये है तथा राजनीतिक द्वैष एवं पतन के कारण राष्ट्र प्रेम जैसी भावनाएँविलुप्त सी हो गई है।भारतीय समाज में पुनः सनातन संस्कृति के मूल्यों को प्रतिष्ठित करने तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण हेतु आवश्यक है कि युवा वर्ग गिरते राजनीतिक स्तर के दायरे से बाहर निकलकर राष्ट्र निर्माण की भावनाओं से ओत–प्रोत होकर सुयोग्य नागरिक कें रूप में तैयार हो, इसके लिए शिक्षा से बढकर अन्य कोई साधन नहीं है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में पुनः भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्यों तथा राष्ट्रीय गौरव को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है ये वे जीवन मूल्य और तत्व है जिनका उल्लेख आज से हजारो वर्ष पूर्व आचार्य चाणक्य ने किया था।अतः प्रस्तुत शोध पत्र में आचार्य चाणक्य का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

➢ **प्रस्तावना :–**
संसार जिस समय मनुष्य बनने का प्रयत्न कर रहा था उस समय हमारें पूर्वजों ने देवत्व प्राप्त कर लिया था। जीवन के नैतिक और सामाजिक तत्वों की मीमांसा कर चुकने पर उन्होनें आध्यात्मिक और पारलौकिक तत्वों के सूक्ष्मतम रहस्य भी छान डाले। ज्ञान और विज्ञान का ऐसा कोई अंक नही बचा जो उनकी सूक्ष्म दृष्टि से छूट गया हो।प्राचीन भारतीय इतिहास के एक महान आचार्य, राजनीतिज्ञ, सफल कूटनीतिज्ञ, अखंड भारत के निर्माता और महामंत्री आचार्य चाणक्य ने जो शिक्षा संकल्पना प्रस्तुत की वह अपने आप में अद्वितीय है। ''मैं आचार्य हूँ, मुझे समाज और राष्ट्र का विचार करना है।'' यह प्रेरक वाक्य आचार्य चाणक्य का है। इसी प्रकार जब घनानंद ने चाणक्य का अपमान किया तो उन्होनें स्पष्ट शब्दों में कहा ''शिक्षक कभी साधारण नही होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद में खेलते है।'' और अपने इन शब्दों को उन्होनें चरितार्थ भी कर दिखाया। घनानंद जैसे विलासी शासक के कारण प्रजा का शोषण हो रहा था और ऐसा दुर्बल राष्ट्र कभी भी परकीय आक्रमण का शिकार बन सकता है। इस स्थिति में विद्यापीठों को आगे आकर राष्ट्र को संगठित करना चाहिए। इसी प्रकार भारत पर सिकंदर के आक्रमण करने पर आचार्य चाणक्य ने अपना कर्तव्य समझकर राष्ट्र रक्षा हेतु अपने विद्यार्थियों को लेकर राष्ट्र प्रेम की ऐसी अलख जगाई कि सिकंदर उतर–पश्चिमी प्रदेश से आगे बढने का साहस नही कर पाया। इस विदेशी आक्रमण से एक महान आचार्य (शिक्षक) चाणक्य ने राष्ट्र को संगठित करने की अनिवार्य आवश्यकता को समझ लिया था। उन्होनें सर्वप्रथम अपने विद्यार्थियों को ही विदेशी आक्रांता के विरूद्ध लडने हेतु तैयार किया। आचार्य चाणक्य के शिक्षा संबंधी ये विचार कि शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से बालकों का सर्वांगीण विकास कर राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है और एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है और राष्ट्रीय गौरव व संस्कृति को अक्षुण्ण बनाएं रखा जा सकता है। ये राष्ट्रीय शिक्षा नीति से मेल खाते है, जिनका अध्ययन किया जा सकता है।

➢ **शोध का उद्देश्य :–**
- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आचार्य चाणक्य की नीतियों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में अध्ययन करना।
- आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीति तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सम–सामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

➢ **शोध विधि :–**शोधकर्ता ने संबधित शोध हेतु दार्शनिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।
➢ **मुख्य शब्दावली :–**आचार्य, शिक्षा, नीति, राष्ट्र, प्रांसगिकता।

➢ **आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीति :–**

आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र ग्रन्थ के प्रथम अध्याय के प्रथम अधिकरण 'विनयाधिकरण' का प्रथम प्रकरण 'विद्यासमुदेश' (विद्याओं की गणना) 'आन्वीक्षकी स्थापना' के साथ प्रारम्भ होता है। आचार्य चाणक्य कहते है कि उनके शिष्य अपने पहले विषय के रूप में आन्वीक्षकी का अध्ययन करें; अब जरा कल्पना करे कि हमारी शिक्षा–व्यवस्था में अध्ययन–अध्यापन का पहला विषय चिंतन हो तो क्या यह अद्भूत शुरूआत नही हैं। अगर हम किसी प्रकार अपने बच्चों को स्कूलों में सोचने, विचारने, जाँचने, पूछने, प्रश्न करने, तर्क करने और फिर इन सबके आधार पर अपने नीजी निष्कर्ष निकालने की शिक्षा दे सके, तो हमारें विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से कितनी प्रतिभाशाली पीढियाँ निकलेंगी।

किन्तु ऐसी शिक्षा की बजाय हम भेड चाल वाली मानसिकता का अनुसरण करते हैं। बस केवल वह करते जाओं जो दूसरे व्यक्ति कर रहे हैं, स्कूल जाओं, पढों, डिग्री लो, कोई काम–काज या नौकरी पक्की करो और पढाई का काम पूर्ण हूआ। इस प्रकार की व्यवस्था बमुश्किल ही किसी व्यक्ति की श्रेष्ठतम सम्भावनाओं को सामने ला पाती है। हमें आकडों से परिचालित शिक्षा–पद्धति से हटकर पडताल और परीक्षण की प्रक्रिया की ओर जाना आवश्यक है। आइये हम अपने बच्चों को सोचने, विचारने और जिज्ञासा करने, कल्पना करने, गढने, रचने, सपना देखने, परिकल्पना करने और अपने भविष्य को अनुठे ढंग से गढने की शिक्षा दे। आचार्य चाणक्य ने अपनी शिक्षा पद्धति में यही किया था, वे अपने शिष्यों को नेतृत्व क्षमता में सक्षम बनाना चाहते थे और नेतृत्व का प्रथम गुण है सटीक और सुस्पष्ट ढंग से सोचना। इस प्रकार की स्पष्टता से ही सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती हैं और एक सही निर्णय हर किसी पर प्रभाव डालता है।आचार्य चाणक्य छात्रों को किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए इस पर विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि–

विद्यानं तु यथास्वमाचार्य प्रामाण्याद्विनयों नियमश्च।
(अर्थशास्त्र–प्रथम अधिकरण, प्रकरण–2, अध्याय–4, श्लोक–3)

विभिन्न विद्याओं के विभिन्न आचार्यो के मतानुसार ही शिष्य का शिक्षण और नियमन होना चाहिए। अर्थात छात्र को किस प्रकार की शिक्षा प्रदान की जायें इस हेतु विभिन्न विषयों या विद्याओं के विशेषज्ञ आचार्यो से ही शिक्षण कार्य कराना चाहिए।

➢ **शिक्षा के उद्देश्य :–**

आचार्य चाणक्य ने व्यष्टि स्तर पर जीवन के विभिन्न पक्षों यथा – शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किये है, जो इस प्रकार है।

❖ **शारीरिक विकास :–**

आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास करना है। **''नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः''** अर्थात निर्बल के द्वारा आत्मतत्व प्राप्त नही किया जा सकता। आचार्य चाणक्य के अनुसार व्यक्ति के समुचित विकास के लिए शरीर को बलिष्ठ एवं स्वस्थ बनायें रखना अति आवश्यक है।

❖ **चारित्रिक विकास :–**

आचार्य चाणक्य का मत है कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के चरित्र का निर्माण किया जाना चाहिए, व्यक्ति का चरित्र निर्माण करना ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। समाज का नेतृत्व व देशहित के लिए चरित्रवान व्यक्तियों की अत्यंत आवश्यकता है। विद्याप्रेमी, सत्यवृत, अभिमान रहित, परोपकारी, संसार के दुःखों का दलन करने वाला, सद्गुणों से विभूषित, कर्मरती व्यक्ति तैयार करना शिक्षा का ही कार्य और परम उद्देश्य है।

❖ **भावी जीवन की तैयारी :–**

आचार्य चाणक्य के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति तथाउसके परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इसके लिए शिक्षा को गतिशील व लचीला होना पडेगा ताकि व्यक्ति अपने भोजन व अन्य आवश्यकताओं को प्राप्त कर सके। इस हेतु विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जायें, जो आवश्यकता के अनुरूप हो। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य बालक को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना और उन्हें भावी जीवन के लिए तैयार करना है।

❖ **सर्वांगीण विकास :–**

आचार्य चाणक्य शिक्षा को ज्ञान का संग्रह नही मानते, बल्कि शिक्षा का तात्पर्य उस ज्ञानार्जन से लगाते है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक हो अर्थात जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक एवं आर्थिक विकास में योग दे, व्यक्ति के निर्बाध रूप से आध्यात्मिक पूर्णता की अनुभूति में सफलता प्राप्त करा सके। लोगो में ज्ञान, कल्पना, विचार व उच्च अभिलाषाएँ उत्पन्न हो और शिक्षा द्वारा उनको अज्ञान के अंधकार से मुक्त कर उनका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक अर्थात उनका सर्वांगीण विकास किया जायें।

❖ **सांस्कृतिक विकास :–**

आचार्य चाणक्य ने विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास पर बल देते हुए कहा है कि 'मनुष्यों को उनकी बोलचाल की भाषा में ही शिक्षा देनी चाहिए, किंतु साथ ही संस्कृत भाषा की शिक्षा भी अनिवार्य हो क्यों कि संस्कृत शब्द की ध्वनि मात्र राष्ट्र को एक प्रकार की शक्ति, प्रतिष्ठा व तेज प्रदान करती है।' भारतीय वेद, दर्शन, पुराण, उपनिषद् सबका एक ही लक्ष्य है श्रेष्ठतम की प्राप्ति। भारतीय संस्कृति का अर्थ उस श्रद्धा से है, जो ज्ञान और तप की ओर, विवेकयुक्त सप्रयत्नों की ओर, हमारी भावनाशीलता की ओर अग्रसर करती है और हमारी आध्यात्मिक उन्नति करती है अतः इस गौरवशाली संस्कृति को अक्षुण्ण बनायें रखने हेतु आवश्यक है कि प्रत्येक पीढी को शिक्षा के माध्यम से हमारी संस्कृति का ज्ञान प्रदान कर उनका सांस्कृतिक विकास करे।

❖ **नागरिकता के गुणों का विकास :–**

आचार्य चाणक्य भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा सुयोग्य नागरिकों का निर्माण करने के पक्षधर है। वे बालक–बालिकाओं में आदर्श नागरिकता के गुणों का समावेश करना चाहते है, जिससे हमारा राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर हो सके। आचार्य चाणक्य के अनुसार नागरिकता के गुण है– उच्च चरित्र बल, दृढ इच्छा शक्ति, नेतृत्व की क्षमता, ईमानदारी, निष्ठा, कर्तव्यपरायणता,अपने कर्तव्यों व अधिकारों का ज्ञान जो निजी स्वार्थ को त्याग कर समाज कल्याण कर सके, दूसरों के साथ सहयोग की भावना रख सके तभी देश का कल्याण हो सकेगा।

❖ **राष्ट्रीयता की भावना का विकास :–**

आचार्य चाणक्य का विचार है कि शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना जनमानस में प्रज्ज्वलित की जानी चाहिए। उनके मतानुसार हमारा धर्म, हमारी राष्ट्रीयता की भावना ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मूलाधार है, जीवन संगीत है। आचार्य चाणक्य ने इस संबंध में चेतावनी देते हुए कहा है कि स्मरण रखों, यदि तुम पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता के चक्कर में पडकर अपने राष्ट्रीयता का आधार धर्म यानि आध्यात्मिकता को त्याग दोगे, तो उसका परिणाम होगा कि तीन पीढीयों में ही तुम्हारा जातीय अस्तित्व मिट जायेगाा इसलिए राष्ट्र को

तोड़ने वाली शक्तियों के विरूद्ध एक होकर मुकाबला करों, और यह तभी संभव हो सकता है, जब शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया जायें।

➢ **राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 :–**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020, 21 वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारें देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पुरा करना है। यह शिक्षा नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21 वीं सदी की शिक्षा के लिए आंकाक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें एसडीजी–4 शामिल है, के संयोजन में शिक्षा व्यवस्था उसके नियमन और गवर्नेंश सहित सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ–साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए, बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है।

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गयी है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नही बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। इन सभी बातों का नई शिक्षा नीति में समावेश करने का उद्देश्य भारत की समृद्ध विविधता और संस्कृति के प्रति सम्मान प्रकट करना तथा भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकि आवश्कताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा और ज्ञान परंपराओ के बारे में ज्ञानवान बनाना, राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत के सतत् उँचाइयों की ओर बढने की दृष्टि से अतिआवश्यक है।

➢ **राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांत :–**

शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ मानव का निर्माण करना है, जो तर्क संगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करूणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हो। एक अच्छी शिक्षण संस्था वह है, जिसमें बालक की उचित देखभाल की जाती हो, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध हो, जहाँ सभी छात्रों को सीखनें के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराये जाते हो और सीखनें के लिए अच्छे बुनियादी ढाँचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के आधारभूत सिद्धांत इस प्रकार है –

- ❖ प्रत्येक बालक की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उसके विकास हेतु प्रयास करना। शिक्षकों और अभिभावकों को इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना जिससे वे बालक की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में उसके सर्वांगीण विकास पर पुरा ध्यान दे सके।
- ❖ बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना, जिससे सभी बच्चें प्राथमिक स्तर पर साक्षरता और संख्याज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त कर सके।
- ❖ लचीलापन, ताकि विद्यार्थियों में उनके सीखने के तौर–तरीके और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो, और इस प्रकार वे अपनी प्रतिभा और रूचियों के अनुसार जीवन में अपना मार्ग चुन सके।
- ❖ कला और विज्ञान के बीच पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं आदि के बीच कोई स्पष्ट अलगाव न हो, जिससे ज्ञान क्षेत्रों के बीच हानिकारक उँच–नीच और परस्पर दूरी एवं असंबद्धता को दूर किया जा सके।
- ❖ समस्त ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने हेतु एक बहु–विषयक दुनियां के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु–विषयक और समग्र शिक्षा का विकास करना।
- ❖ अवधारणात्मक समझ पर बल देना न कि रटंत पद्धति और केवल परीक्षा के लिए पढाई।
- ❖ रचनात्मक और तार्किक सोच, तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए।
- ❖ नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे– सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, समानता और न्याय।
- ❖ सीखने पर सतत् मूल्यांकन पर जोर, इसके बजाय कि वर्ष के अंत में होने वाली परीक्षा को केंद्र में रखकर शिक्षण हो।
- ❖ सभी शैक्षणिक निर्णयों की आधारशीला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन, साथ ही शिक्षा को लोगो की पहुँच और सामर्थ्य के दायरे में रखना, यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी छात्र शिक्षा प्रणाली में सफलता हासिल कर सके।
- ❖ शिक्षकों और संकाय को सीखनें की प्रक्रिया का केंद्र मानना, शिक्षकों की गुणवता में वृद्धि और तैयारी की उत्कृष्ठ व्यवस्था, निरंतर व्यावसायिक विकास और सकारात्मक कार्य वातावरण और सेवा की स्थिति।
- ❖ शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा निरंतर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत् समीक्षा।
- ❖ भारतीय जडों और गौरव से बँधे रहना, और जहाँ प्रासंगिक लगे वहाँ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं को शामिल करना तथा उनसे प्रेरणा लेना।

➢ **राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 का विजन :–**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है। जो सभी को उच्चतर गुणवतापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना और भारत को वैश्विक ज्ञान की महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवन्त और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान देगी। इस शिक्षा नीति में परिकल्पित किया गया है कि हमारें शिक्षण संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उतरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करे। इस शिक्षा नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में बल्कि बुद्धि, व्यवहार और उनके कार्यो में भी हो और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिवद्ध हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सके।

➢ **आचार्य चाणक्य की शिक्षा नीति की राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के संदर्भ में प्रांसगिकता :–**

- ❖ आचार्य चाणक्य का समस्त दर्शन भारतीय सनातन संस्कृति, वैदिक मूल्यों और आदर्शो पर आधारित था। राष्ट्रीय शिक्षा नीतिभारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली है जिसका उद्देश्य भारतीय मूल्यों कों पुनर्प्रतिष्ठित करना है।
- ❖ आचार्य चाणक्य ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र के लिए योग्य नागरिकों का निर्माण करना माना ताकि राष्ट्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर बना रहे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा भी युवाओं को प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों, संवैधानिक मूल्यों और लोकतान्त्रिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर उन्हें योग्य नागरिकों के रूप में स्थापित करना है।
- ❖ आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र में कहा है कि**'वृत्तचौलकर्मा लिपिं संख्यानं चोपयुंजीत।'**अर्थात मुण्डन–संस्कार या चुडाकरण संस्कार के बाद बालक को वर्णमाला और अंकमाला का अभ्यास कराया जाएं।राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है, ताकि बच्चें प्राथमिक स्तर पर साक्षरता और संख्याज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त कर सके।
- ❖ आचार्य चाणक्य ने अपनी शिक्षा नीति में हस्त कला और ललित कलाओं की शिक्षा के साथ–साथ आद्यौगिक शिक्षा और प्रशिक्षण पर भी बल दिया है ताकि शिक्षा बालक को आत्मनिर्भ बना सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी समस्त ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने हेतु एक बहु–विषयक दुनियां के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु–विषयक और समग्र शिक्षा का विकास करना लक्ष्य रखा गया है।
- ❖ आचार्य चाणक्य ने अपनी शिक्षा नीति के माध्यम से एक राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने का प्रयास किया राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा भी सभी वर्गो की समानता को आधार बनाकर राष्ट्रीय एकता को सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया।
- ❖ आचार्य चाणक्य ने राजा या राज्य द्वारा नियंत्रित शिक्षा प्रणाली का समर्थन करते हुए सबको शिक्षा प्रदान करना राजा का उतरदायित्व स्वीकार किया है। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा भी सभी को शिक्षा प्रदान कराना सरकार का उतरदायित्व सुनिश्चित किया गया।
- ❖ आचार्य चाणक्य ने स्त्री व पुरूष के साथ बिना किसी भेद के सभी के लिए शिक्षा का समर्थन किया है वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी बिना किसी भेद के सार्वभौमिक शिक्षा का समर्थन करती है।

➢ **निष्कर्ष :–**

आचार्य चाणक्य निःसंदेह एक महान शिक्षक थे जिन्होनें अपनी शिक्षा नीति में भारतीय सनातन मूल्यों, राष्ट्रीय गौरव और नैतिकता को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरी था इसलिए उनके समस्त शैक्षिक चिंतन का उद्देश्य राष्ट्रीय कल्याण था। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गयी जिसका उद्देश्य पुनः अपने राष्ट्रीय गौरव को विश्व पटल पर स्थापित करना है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. पं. चतुर्वेदी, सीताराम, ''शिक्षा के नए प्रयोग और विधान'', प्रकाशक – नन्द किशोर एंड ब्रदर्स चौक, बनारस।
2. डॉ. खरे, के. पी., डॉ. अग्रवाल, बरखा, ''शिक्षा शास्त्र'', प्रकाशक – राजीव प्रकाशनप्रयागराज।
3. शर्मा, महेश दत्त – ''क्लासरूम में चाणक्य'' प्रकाशक – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. प्रो. पाठक, रमेश प्रसाद – ''आचार्य चाणक्य का शैक्षिक चिंतन'' प्रकाशक – कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. गैरोला, वाचस्पति, ''कौटिल्य का अर्थशास्त्र और चाणक्य सूत्र'', प्रकाशक – चौखंबा विद्याभवन चौक,बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे पो. बो. 68,वाराणसी।
6. डॉ. अग्रवाल, उषा, ''चाणक्य नीति'', राष्ट्र सृष्टा एवं भविष्य दृष्टा, प्रकाशक – सुल्तान चंद एंड संस, दरियागंज, नई दिल्ली।
7. प्रो. प्रसुन, श्रीकांत, ''चाणक्य नीति एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र'', प्रकाशक – वी एण्ड पब्लिशर्स, एफ 2/16 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।
8. दीपकंर, आचार्य, ''कौटिल्य कालीन भारत'', प्रकाशक – हिंदी साहित्य समिति, सूचनाविभाग, लखनऊ, उतरप्रदेश।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
10. डॉ. ठाकुर, गोपाल कृष्ण, डॉ. राय, मनोज कुमार, ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 एक सिंहावलोकन'' शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, प्रकाशक – महात्मां गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी वि. वि. वर्धा, महाराष्ट्र।